E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(1): 228-230
Received: 17-11-2019
Accepted: 21-12-2019

शम्भू पासवान
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग,
ल.ना.मि. विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
शम्भू पासवान
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग,
ल.ना.मि. विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ. उषा किरण खानः उपन्यासों में ''वर्णित समाज''

शम्भू पासवान

सारांश
साहित्य और इतिहास एक–दूसरे के विरोधाभासी नही है, बल्कि पूरक हैं। साहित्य का एक ऐतिहासिक पक्ष होता है, तो दूसरा राजनीतिक पक्ष भी होता है। डॉ0 उषा किरण खान के कई उपन्यास हैं, जिसमें साहित्यिक भूमिका तो निभाती ही है, साथ में सामाजिक भूमिका अधिक है, जिसका सारांश में प्रस्तुत कर रहा हूँ। 'अगन हिंडोला' इन्हीं दो पक्षों का समेकित प्रयास है। सूरी साम्राज्य के संस्थापक शेरशाह को केन्द्रबिन्दु में रखकर लिखा गया उपन्यास है। इसके माध्यम से मध्यकालीन भारतीय समाज की संरचना, आर्थिक–सांस्कृतिक और राजनैतिक पक्ष को उद्घाटित किया गया है। 'फागुन के बाद' में मौसम में बदलाव के साथ मानवीय जीवन के बदलते घटनाक्रम को विस्तृत और वैचारिक आग्रह के साथ प्रस्तुत किया है। ''सिरजनहार' में विद्यापति को सम्पूर्णता से खोजने का प्रयास किया गया है, क्योंकि लेखिका का लगाव उसी मिथिला की भूमि से है। 'भामती' में मिथिला के लोक जीवन, इतिहास, क्षेत्रीय विशेषताओं, सामाजिक–राजनैतिक जीवन के साथ ही सम्पूर्ण सांस्कृतिक विरासत को उद्घाटित करती है। हाल ही में प्रकाशित उपन्यास 'गई झुलनी टूट' में ग्रामीण लोक के बनते–बिगड़ते सम्बन्ध, नारी–मन की व्यथा और पंचायतीराज के ताने–बाने का रेखांकन है। ग्रामीण–जीवन को उकेरता यह उपन्यास है।

कुटशब्दः साहित्य, समाज, ग्रामीण–जीवन

भूमिका
हिन्दी और मैथिली, दोनों भाषाओं में सिद्धहस्त कथाकार है– उषाकिरण खान। परन्तु उषा किरण खान के मामले में यह जान लेना लाजिमी है कि सबसे पहले वे एक समर्पित सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। ऐसे ही कार्यकर्त्ता वाले व्यक्तित्व का ही दूसरा रूप है 'लेखक–कथाकार' का पक्ष। वे आज भी दलितों, वंचितों, अल्पसंख्यकों और उपेक्षितों समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। लिखने की प्रेरणा भी शायद वे इन्हीं उपेक्षित–वंचित वर्गों से पाती हैं। उनके जीवन के साथ जुड़ने तथा उन्हें करीब से देखने के कारण उषाकिरण खान की उपन्यासों में 'प्रामाणिक ग्रामीण–जीवन–यथार्थ' सहज ही दर्ज हो जाती है। इस प्रकार इन्हीं उपेक्षितों–वंचितों की जिजीविषा, जीवन–संघर्ष, आर्थिक समस्याएँ, वास्तविक जरूरतें और सबसे ऊपर उनकी निश्छल भावनाएँ इनकी कथा–साहित्यों में अनायास जुड़ जाती हैं। पात्र–परिवेश जीवन्त और प्रामाणिक हो उठते हैं। यही कारण है कि उषा जी की कई उपन्यासों में जहाँ एक ओर गाँव की सोंधी मिट्टी की महक है, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण जीवन–संघर्ष का जुझारू स्वर। लगभग कई पुरस्कार तो मिल चुके हैं। हाल ही में भारत–भारती सम्मान उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दिया गया, यह पुरस्कार पाने वाली महादेवी वर्मा के बाद पहली महिला है, पुरस्कार से सभी लेखिकाओं में और रचना–शक्ति बढ़ेगी। मिथिला की भी प्रथम लेखिका हुई, जिन्हें नागार्जुन से प्रेरित होकर रेणु की परम्परा को आगे बढ़ा रही है, विशेष रूप से अंचल विशेष की रचना लिख रही हैं।

डॉ. उषा किरण खानः उपन्यासों में ''वर्णित समाज''
'उपन्यास' समाज का प्रतिबिम्ब होता है। किसी भी उपन्यास में उस समाज की दशा और दुर्दशा का यथार्थ वर्णन किया जाता है, उपन्यास की श्रेष्ठता इस बात पर निर्भर करती है, कि उसमें समाज की कितनी सच्ची तस्वीर पेश की गई है, हिन्दी के वरिष्ठ आलोचक 'मैनेजर पाण्डे' ने ''उपन्यास और समाज' के अन्तर्सम्बन्ध को समझने की कोशिश करते हैं, लेकिन सार्थक रूप से उपन्यास को समझना चाहिए, क्योंकि 'उपन्यास' समाज के लिए लिखा जाता है।''[1] उषा किरण खान के उपन्यासों में भारतीय समाज का यथार्थ वर्णन पूरी कलात्मकता के साथ हुआ है। इनके उपन्यासों में भारतीय गाँव में विशेष कर 'मिथिला' के गाँवों का वर्णन अत्यन्त सजीवता के साथ किया गया है। ''व्यक्ति के प्रवृत्ति को समझकर, समाज, दर्शन, इतिहास मनोविज्ञान आदि के गूढ़ रहस्य की रोचक कथात्मक अभिव्यक्ति का ही दूसरा नाम उपन्यास है।'' [2]

समाज में रहनेवाले मनुष्य–विरोधी, तमाम प्रवृत्तियों की निर्मम आलोचना के लिए उपन्यास तत्पर रहता है। बहुस्वरता उपन्यास का असली मिजाज है। यह अकारण नहीं है कि उपन्यास समाज को अलग करता है, क्योंकि उपन्यास को लोकतांत्रिक विधा की गरिमा प्राप्त है। आलोचक मिखाईट बख्तियान के अनुसार उपन्यास में केवल दृष्टियों और स्वरों की अनेकता होती हैं। दृष्टियों और स्वरों की अनेकता से उपन्यास की संरचना में लोकतंत्र आता है। उपन्यास में केवल रचनाकार की दृष्टि और स्वर की स्वतंत्र सत्ता होती है, जिससे समाज में उपन्यास के पाठक उसकी मानवीय गरिमा और अर्थवत्ता का भी निर्माण करता है। इसी गुण–विशेष के कारण ही 'उपन्यास और समाज' का संबंध को जोड़ने का काम करते हैं। उपन्यास के भीतर जिस दुनिया को दिखाई गई है, वह व्यापकता और विविधता के साथ उसके रचाव की नवीनता अच्छे उपन्यास की कसौटी हो सकती है। देखने की बात यह होती है कि दुनिया जीवन के कितने पास है। यह जीवन कितना विश्वसनीय है और जीवन जीने वाले मनुष्य के अन्दरत्म में कितना गहरा धँसा है। समाज के आम लोगों की संस्कृत्ति के बिना पहचाने और आम जनता के दिन रात संघर्ष के बगैर देखे एक श्रेष्ठ उपन्यास की रचना कठिन है। समाज की परिस्थिति और समाज में रहने वाले हर वर्ग की परिस्थिति को देखते हुए जिस उपन्यास की रचना और प्रकाशित की जाती है, वही उपन्यास समाज को हमेशा प्रेरणा देती है। ''उपन्यास विद्या के जाने माने आलोचक 'रैल्फ फौक्स' कहते हैं कि जनता को जाने, लोगों के साथ हम उतना ही घनिष्ठ हो जितना घनिष्ठ एक ही मेज पर नित्य चाय पिने वाले होते हैं।''[3] डॉ0 उषा किरण खान मुख्य रूप से स्त्री–केन्द्रित लेखिका हैं। डॉ0 खान की संवेदना का केन्द्र गाँव है, जहाँ से उनकी चेतना रचना की क्रियाविधि से जुड़ती है। वे लोक का छौंक रचना में डालकर उसकी प्रभावशीलता को अति महत्त्वपूर्ण बना देती हैं। उनकी रचना में मनुष्य को बचाने की ललक और समकालीन आचार–विचार को बूझने की उत्कंठा समान भाव से व्यक्त करते हुए आकार ग्रहण करती हैं। डॉ0 उषा किरण खान के सम्पूर्ण रचना संसार में लौकिक भाव अपने मौलिक रूप में मौजूद रहता है, जिससे यह जाहिर होता है, कि लेखिका के यहाँ परम्परा का तत्त्व गौण नहीं हैं। हाल में प्रकाशित उपन्यास 'गई झुलनी टूट' में ग्रामीण लोक के बनते–बिगड़ते सम्बन्ध, नारी–मन की व्यथा और पंचायती राज के ताने–बाने का रेखांकन है। उपन्यास का सम्पूर्ण वातावरण ग्रामीण चित्रों और संवेदनाओं के विलयन से तैयार है। अपने अतीत, इतिहास, मिथक और ग्रामीण जीवन को उकेरता यह उपन्यास सूक्ष्म माानवीय स्पन्दनों की व्यथा का लेखा–जोखा भी प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में स्त्री–चेतना का स्वर तीखा है। उपन्यास के सभी स्त्री–पात्र अपने अस्मितागत मूल्यों को जीना चाहती हैं। यह मूल्य ही इस उपन्यास की स्त्री–विमर्श के खाँचे से बाहर निकालकर मनुष्यता के मानवीय सरोकारों से जोड़ता है। उपन्यास ग्रामीण समाज के भीतर बन रहे बिम्बों का यथार्थ अंकन है, जहाँ से हम भारतीय ग्रामीण परिवेश की गतिशीलता को समझ सकते हैं।

'भामती' डॉ0 उषाकिरण खान का अप्रतिम उपन्यास है। वे भामती को केन्द्र में स्थापित कर मिथिला के लोकजीवन, इतिहास, क्षेत्रीय विशेषताओं, सामाजिक–राजनैतिक जीवन के साथ ही सम्पूर्ण सांस्कृतिक विरासत को उद्घाटित करती हैं। भामती के नायक वाचस्पति मिश्र सनातन और सातत्य के प्रतीक है, जो परिवर्तन के स्थान पर एक धूरी की तरह अटल है। उषा जी 'भामती' के सहारे नारी मन की व्यथा को संकेतित करती हैं। वे नारी–विमर्श की आधुनिक स्थापना को निरूपित नहीं करती, बल्कि प्राचीन मैथिल समाज में स्त्रियों की दशा और दिशा को लेकर प्रश्न पूछती है, ''यह उपन्यास ऐतिहासिक आख्यान रचकर उस काल की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थितियों का लेखा–जोखा है। उसमें सन्निहित मूल्य प्रतिमान, आदर्श और सामाजिक चेतना उपस्थित है।''[4] उषा किरण खान की रचनाधर्मिता लौकिक मनोभावों का आख्यान रचती हैं। लौकिक संवेदना यथार्थ की कड़ी धूप से निःसृत है। मिथिला ही उनके लिए यथार्थ भूमि है, जहाँ सांस्कृतिक विरासत के साथ वे पली–बढ़ी है।

'सिरजनहार' उपन्यास मिथिला की उसी सांस्कृतिक विरासत का आधुनिक भावबोध के साथ प्रस्तुतीकरण है। यह ऐतिहासिक जीवनीपरक उपन्यास विद्यापति के जीवन–वृत्त, जीवन–संघर्ष और जीवन–द्वन्द्व की सृजनात्मक अभिव्यक्ति है। विद्यापति के जीवन–चरित्र को केन्द्र में रखकर मैथिली की संस्कृति के विभिन्न अंगों–उपांगों का वर्णन है। सृजन एक खोज है, व्यक्ति कभी अपने जीवन–संदर्भों को खोजता है, जिसमें विद्यापति को सम्पूर्णता से खोजने का प्रयास किया गया है, क्योंकि लेखिका की लगाव उसी मिथिला–भूमि से है, जहाँ के विद्यापति है। विद्यापति इस उपन्यास के केन्द्रीय पात्र है, जिसके इर्द–गिर्द पूरी मिथिला की संस्कृति जीवन्त हो उठती है। लेखिका ने इस उपन्यास में विद्यापति के जीवन–चरित्र को बड़े कैनवास पर उकेरा है, जहाँ से मैथिल–समाज की सामाजिक–आर्थिक संरचना के साथ ही सांस्कृतिक वैशिष्ट्य की झलक मिल जाती हैं। डॉ0 उषा किरण खान प्रकृति चेतना से सम्पन्न कथाकार हैं। उनके यहाँ प्रकृति के प्रति लगाव और प्रकृति तथा मानव–जीवन के कोमल और सरस पक्ष के प्रति आग्रह समान रूप से अंकित है। मानवीय संवेदनाओं का प्रकृति के प्रति साहचर्यजन्य प्रेम का रूपक है, 'फागुन के बाद' उपन्यास प्रकृति निर्जीव जड़वस्तु होकर एक साकार और सजीव सत्ता के रूप में उपस्थित हुई है। फागुन का महीना उल्लास और उत्सव का प्रतीक है। इस महीने में प्रकृति का यौवन अपने चरम उत्कर्ष पर होता है। लेखिका ने उपन्यास में मौसम बदलाव के साथ मानवीय जीवन के बदलते घटनाक्रम में विस्तृत और वैचारिक आग्रह के साथ प्रस्तुत किया है। 'फागुन के बाद' की ही स्थितियाँ जीवन में ज्यादातर बनी रहती हैं, अगर उसमें धैर्य के साथ मनोयोगपूर्वक, दृढ़ प्रतिज्ञ होकर संघर्ष किया जाय तभी 'फागुन की पूनर्वापसी संभव है, उक्त उपन्यास मौसम के परिवर्तित रूप के साथ ही मानवीय चेतना में परिवर्तनशीलता का आख्यान है।''[5] साहित्य और इतिहास एक दूसरे के विरोधाभासी नहीं है, बल्कि पूरक हैं। साहित्य का एक गहरा ऐतिहासिक पक्ष होता है तो दूसरा राजनीतिक पक्ष भी। उपन्यास 'अगन हिंडोला' इन्हीं दो पक्षों का समेकित प्रयास है। वे इतिहास की अध्येता रही हैं, परन्तु लेखन साहित्यिक विधा में करती है। साहित्य और इतिहास का एक गहरा संबंध है, जिसके माध्यम से सामाजिक मनोवृत्तियों का चित्रण संभव हो सका है 'अगन हिंडोला' सूरी साम्राज्य के संस्थापक शेरशाह को केन्द्रबिन्दु में रखकर लिखा गया उपन्यास है। इसके माध्यम से मध्यकालीन भारतीय समाज की संरचना, आर्थिक–सांस्कृतिक और राजनैतिक पक्ष को उद्घाटित किया है। ''शेरशाह का ताज कंटकाकीर्ण राहों का सच है, लेखिका ने इन राहों के सहारे भारतीय जीवन–धारा को रेखांकित किया है। शिल्प पक्ष किसी भी कथा के लिए महत्त्वपूर्ण होता है।''[6] 'अंगन हिंडोला' में शिल्प पक्ष बेजोड़ है। कथा की प्रवाहमयता में भाषा कही बाधक नहीं है, बल्कि उसकी अन्विति को बनाये रखती हैं। यह उपन्यास अपने सम्पूर्ण कलेवर में कालजयी है। राजनीति उषा जी के कथा–संस्कार का प्रमुख अवयव है। चाहे उपन्यास के विषय–वस्तु के संदर्भ सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक ही क्यों न हो, उसके कथातत्त्व में राजनीति का हिस्सा प्रमुख हो जाता है। उषाजी की राजनैतिक चेतना सम्पन्न कलाकार है, राजनैतिक सक्रियता जीवन्तता का प्रतीक है, जहाँ से जीवन के सभी पहलुओं को समग्रता से देखा जाता है। 'रतनारे नयन' राजनीति के इन्ही अर्थबिम्बों को चित्रित करता है। बिहार के

राजनैतिक परिदृश्य पर केन्द्रित यह उपन्यास–जे0पी0 आन्दोलन के बाद की स्थिति का लेखा–जोखा किया गया है। है। लेखिका का कथा–संसार बिहार की सामाजिक–राजनैतिक परिवेश की उपज है। 'रतनारे नयन' उपन्यास केवल राजनैतिक सक्रियता का अंकन प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि स्त्री–विमर्श के लिए नये प्रवेश का द्वार खोलता है। ''बिहार की सामाजिक–सांस्कृतिक संरचनाओं को रेखांकित करता यह उपन्यास अनमेल–विवाह, प्रेम–विवाह और विजातीय विवाह जैसे अनसुलझे प्रश्नों की भी विवेचना प्रस्तुत करता है।'' [7]

यह उपन्यास स्त्री–दृष्टि से भी पाठ की मांग करता है, क्योंकि लेखिका की घोषणा 'यह सदी मातृशक्ति की सदी है' केवल घोषणा भर नहीं, बल्कि समाज में हो रहे परिवर्तन के प्रति विश्वास और आस्था का बोध है। यह उपन्यास उषा जी के जीवन–कर्मों का साहित्यिक रूपान्तरण है। 'सीमांत कथा' उपन्यास इन्हीं मूल्यों और आदर्शों को समेकित करने का मुकम्मल प्रयास है। इस उपन्यास के पात्र वामपंथ और गाँधीवाद के वैचारिक आयामों के प्रतिनिधि है। उपन्यास के नायक इन्हीं दर्शनों के मूल्यों को जे0पी0 आन्दोलन के बाद के परिदृश्य के साथ साकार किया है। उस समय की परिस्थितियों से निष्पन्न यह कथा–संसार जातीय हिंसा वर्ग–संघर्ष और राजनैतिक आन्दोलन की पृष्ठभूमि को दिखाता है। 'सीमांत कथा'– उपन्यास बिहार की सामाजिक–राजनीतिक–आर्थिक और सांस्कृतिक पक्षों को सम्पूर्णता के साथ चित्रिण किया गया है।

निष्कर्षः

उषा किरण खाना की संवेदना का केन्द्र गाँव है, जहाँ से उसकी चेतना रचना की क्रियाविधि से जुड़ती है। इस अध्याय में मनुष्य को बचाने की ललक और समकालीन आचार–विचार को बूझने की उत्कंठा समान भाव से संचित है। 'गई झुलनी टूट' में ग्रामीण लोक के बनते–बिगड़ते सम्बन्ध, नाटी मन की व्यथा और और पंचायतीराज के ताने–बाने का रेखांकन है। कई उपन्यासों का सम्पूर्ण वातावरण ग्रामीण चित्रों और संवेदनाओं के विलयन से तैयार हैं। ग्रामीण समाज से लेकर शहरी समाज तक को प्रेरणा मिलेगा। कई रचनाओं में तो कोशी कच्छार से लेकर शहर तक के, उच्च समाज से लेकर निम्न समाज तक वर्णन किया गया है, जिसके दलित, शोषित, पीड़ित, मुस्लिम, ब्राह्मण, धोबी, कई ऐसे पात्र भी है, जो वास्तविक है। कई उपन्यास में स्त्री–चेतना का स्वर लिखा है। उपन्यास के सभी पात्र अपने अस्मितागत मूल्यों को जीना चाहते हैं। ग्रामीण राजनीति का जीवन्त वर्णन मानो ऐसा है जैसे कि प्रेमचन्द या रेणु के उपन्यास में देखने को मिलता है। समाज के सभी वर्णों के लोगों को प्रेरणा परक अध्याय है।

संदर्भ

1. आलोचना की सामाजिकता–मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण–2010 नई दिल्ली, पृ0–312
2. बया, डॉ. कमलानन्द झा, जनवरी–मार्च–2020, पृ0–76
3. वही, पृ0–76
4. उषा हिंडोला, (उषा किरण खान का रचना संसार), संपादक डॉ0 कुमार वरूण, प्रथम संस्करण–2019, अमन प्रकाशन, कानपुर,पृ0–08
5. वही, पृ0–09
6. वही, पृ0–10